



बिहार गजट

असाधारण अंक

बिहार सरकार द्वारा प्रकाशित

23 आषाढ 1939 (श0)

(सं0 पटना 607) पटना, शुक्रवार, 14 जुलाई 2017

जल संसाधन विभाग

अधिसूचना

1 जून 2017

सं0 22/नि0सि0(औ0)-17-07/2007-829—श्री राजेन्द्र प्रसाद केसरी (आई0डी0-3531) तत्कालीन सहायक अभियंता, उत्तर कोयल नहर प्रमंडल सं0-2, औरंगाबाद को विभागीय आदेश सं0-1 सहपठित ज्ञापांक-25, दिनांक 01.02.2005 द्वारा निलंबित करते हुए विभागीय संकल्प ज्ञापांक 187, दिनांक 03.03.2005 द्वारा सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्रण एवं अपील) नियमावली के नियम 55 के तहत निम्नांकित आरोपों के लिए विभागीय कार्यवाही संचालित की गई:-

(1) मुख्य अभियंता, जल संसाधन विभाग, औरंगाबाद में जीप शेड एवं चौकीदार शेड तथा प्रमण्डलीय कार्यालय भवन की मरम्मत से संबंधित चौकीदार शेड एवं गैराज का छप्पर (सी0ए0 सीट) गायब रहना/छत के रीज में मात्र पुराना पतला बल्ली पाया गया तथा राफ्टर पर्लिन नहीं लगाया गया एवं अच्छी तरह से जे0 हुक एवं एस0 हुक से फिक्स नहीं किए जाने के कारण हल्की हवा में छत उड़ गया।

(2) शेड में लगाए गए दरवाजे एवं खिड़कियों के चौखट एवं बल्लों की मोटाई एवं गुणवत्ता भी विशिष्टि के अनुरूप नहीं पाया जाना तथा चौखट एवं खिड़की की लकड़ी निम्न स्तर एवं पल्ले वैल्वेड सेन्टर तकनीकी विशिष्टियों के अनुरूप नहीं पाया जाना। इसकी मोटाई 32एम0एम0 के बजाय 22एम0एम0 के कारण दरवाजे एवं खिड़की का पल्ला टूट गया।

(3) प्रमण्डलीय कार्यालयों एवं अन्य की दीवारों पर सफेदी नहीं कराकर कागजी खानापूर्ति करते हुए तीन बार के बदले एक बार पुताई कराकर तीन बार का विपत्र बनाकर भुगतान किया गया।

संचालन पदाधिकारी से प्राप्त जाँच प्रतिवेदन में आरोपों को प्रमाणित नहीं पाया गया। प्राप्त जाँच प्रतिवेदन की समीक्षा विभागीय स्तर पर की गई एवं समीक्षोपरांत विभागीय पत्रांक-121, दिनांक 29.01.2008 द्वारा असहमति के निम्न बिन्दुओं पर द्वितीय कारण पृच्छा की गई :-

(1) मुख्य अभियन्ता, जल संसाधन विभाग, औरंगाबाद में जीप शेड, चौकीदार शेड तथा प्रमण्डलीय कार्यालय भवन की मरम्मत से संबंधित चौकीदार शेड एवं गैराज का छप्पर (ए0सी0सीट) गायब रहना, छत के रीज में मात्र पुराना पतला बल्ली पाया गया तथा राफ्टर पर्लिन नहीं लगाया गया एवं अच्छी तरह से जे0 हुक एवं एस0हुक से फिक्स नहीं किए जाने के कारण हल्की हवा में छत उड़ गया।

उक्त आरोप के लिए जाँच पदाधिकारी का कहना है कि दिनांक 24.05.2005 को आँधी काफी तेज थी जिसका प्रभाव अन्य प्रमण्डलों में भी पड़ा का तथ्य मान्य नहीं है क्योंकि जीप शेड एवं चौकीदार शेड मुख्य अभियंता के

आवासीय परिसर से बनाया गया था तथा आरोप मुख्य अभियन्ता द्वारा ही प्रतिवेदित है। साथ ही उक्त तिथि को आधी आँधी में क्षति होने के साक्ष्य में उत्तर कोयल नहर अवर प्रमण्डल -2 देव में पुराना चाहरदिवारी गिरने की सूचना संलग्न की गई है। पुराना चाहरदिवारी वर्षा के कारण भी गिर सकता है।

अतः आपके द्वारा उक्त तिथि को तेज आँधी आने का कोई ठोस साक्ष्य समर्पित नहीं किया गया है। जिससे स्पष्ट है कि कार्य को प्राक्कलन के अनुरूप नहीं कराया गया जिसके फलस्वरूप शेड की छत साधारण हवा में उड़ गया।

शेड में लगाए गए दरवाजे एवं खिड़कियों के चौखट एवं पल्लों की मोटाई एवं गुणवत्ता भी प्राक्कलन की विशिष्टियों के अनुरूप नहीं पाया जाना तथा चौखट एवं खिड़की की लकड़ी निम्न स्तर एवं पल्ले वैलडेड सेंटर तकनीकी विशिष्टियों के अनुरूप नहीं पाया जाना। उसकी मोटाई 32एम0एम0 के बजाय 22एम0एम0 के कारण दरवाजे एवं खिड़की का पल्ला टूट गया।

उक्त आरोप के लिए जाँच पदाधिकारी का मानना है कि चौखट एवं पल्ला प्राक्कलन एवं विशिष्टियों के अनुरूप नहीं लगाने के कारण उसकी मापी नहीं ली गई और संवेदक को उसका भुगतान नहीं किया गया, मान्य नहीं है क्योंकि संवेदक द्वारा जब प्राक्कलन के अनुरूप चौखट आदि नहीं लगाया गया था तो उसी समय उसे हटाकर प्राक्कलन के अनुरूप चौखट आदि लगाने का निदेश संवेदक को दिया जाना चाहिए था जो नहीं किया गया। जिससे स्पष्ट है कि आपकी मंशा भी प्राक्कलन के अनुरूप कार्य नहीं कराने का था।

श्री केसरी से प्राप्त द्वितीय कारण पृच्छा के प्रत्युत्तर की समीक्षा की गई एवं समीक्षोपरांत इसे पूर्णतया असंतोषजनक पाते हुए विभागीय आदेश सं०-94 सहपठित ज्ञापांक 703, दिनांक 26.08.2008 द्वारा निलंबन से मुक्त करते हुए निम्न दण्ड संसूचित किया गया :-

(i) निन्दन वर्ष 2003-04

(ii) दो वेतनवृद्धि पर असंचयात्मक प्रभाव से रोक

(iii) निलंबन अवधि में निलंबन भत्ता के अतिरिक्त कुछ भी देय नहीं होगा।

विभागीय दण्डादेश के विरुद्ध श्री केसरी द्वारा माननीय उच्च न्यायालय, पटना में सी०डब्ल्यू०जे०सी० सं०-16562/2008 दायर किया गया। माननीय उच्च न्यायालय, पटना द्वारा दिनांक 28.01.2017 को पारित आदेश में कहा गया है कि संचालन पदाधिकारी द्वारा आरोपित पदाधिकारी के विरुद्ध गठित आरोपों को प्रमाणित नहीं पाया गया। अनुशासनिक प्राधिकार द्वारा संचालन पदाधिकारी से असहमति के बिन्दुओं पर श्री केसरी से द्वितीय कारण पृच्छा की गई। किन्तु असहमति के बिन्दुओं के समर्थन में किसी प्रकार का साक्ष्य संलग्न नहीं किया गया। विभागीय समीक्षा में श्री केसरी के द्वितीय कारण पृच्छा के उत्तर को किस आधार पर स्वीकार योग्य नहीं पाया। इसका उल्लेख विभागीय समीक्षा में नहीं है। मात्र मुख्य अभियन्ता के प्रतिवेदन के आधार पर श्री केसरी के विरुद्ध दण्डादेश निर्गत किया गया है जो कानून की दृष्टि में ग्राह्य नहीं है।

माननीय उच्च न्यायालय द्वारा न्यायादेश में यह भी अंकित किया गया है कि निलंबन अवधि के विनियमन के संबंध में आरोपित पदाधिकारी को नोटिस निर्गत नहीं किया गया है जो स्थापित नियमों के विरुद्ध है। इस आधार पर माननीय उच्च न्यायालय द्वारा श्री केसरी को संसूचित दण्डादेश को निरस्त करते हुए विभाग को नए सिरे से विचार कर आदेश पारित करने का निदेश दिया गया है।

माननीय उच्च न्यायालय द्वारा पारित न्यायादेश के अनुपालन में श्री केसरी के विरुद्ध विभागीय आदेश सं०-94 सहपठित ज्ञापांक 703, दिनांक 26.08.2008 को विभागीय अधिसूचना सं०-707, दिनांक 22.05.2017 द्वारा दण्ड एवं निलंबन अवधि पर निर्णय के अंश को निरस्त करते हुए मामले पर नए सिरे से विचार किया गया। इसके क्रम में यह पाया गया कि श्री केसरी द्वारा पूर्व में समर्पित द्वितीय कारण पृच्छा के प्रत्युत्तर की कंडिका-1 में अंकित किया गया है कि जीप शेड की मरम्मत कराए जाने के पश्चात आई तीव्र आँधी के फलस्वरूप काफी नुकसान हुआ था। परिसर में स्थित गोदाम की सीट उड़ गया था तथा बड़े-बड़े पेड़ गिर थे। इसके बावजूद भी उनके द्वारा मरम्मत कराए गए जीप शेड एवं चौकीदार शेड का सीट नहीं उड़ा था। साक्ष्य के रूप में आँधी के पश्चात लिए गए फोटोग्राफ्स की प्रति संलग्न की गई है। उत्तर की कंडिका-2 में अंकित किया गया है कि शेड में दरवाजे एवं खिड़की नहीं लगाई थी। फलतः स्वीकृत प्राक्कलन में व्यय के पश्चात 46000/- अभी भी अवशेष रह गया है। साथ ही प्रथम विपत्र से अधूरा एवं घटिया कार्य की राशि संवेदक के विपत्र से काटकर भुगतान किया गया है। संवेदक द्वारा कराए गए घटिया कार्य को अमान्य करते हुए जो कार्य प्राक्कलन एवं विशिष्टियों के अनुरूप कराए गए थे उसी मद का भुगतान किया गया है।

श्री केसरी से प्राप्त द्वितीय कारण पृच्छा के प्रत्युत्तर में दिए गए तथ्यों की समीक्षा सरकार के स्तर पर की गई। श्री केसरी के द्वितीय कारण पृच्छा एवं मुख्य अभियन्ता के प्रतिवेदन से विदित होता है कि चौकीदार शेड एवं जीप शेड के निर्माण में बड़े पैमाने पर अनियमितता बरतने की बात प्रवेदित है। प्रतिवेदन में अंकित किया गया है कि निरीक्षण के समय चौकीदार शेड एवं गैराज का छप्पर गायब है। छत के रिज में मात्र पुराना पतला बल्ला पाया गया। इस कार्य में राफ्टर पर्लिन नहीं दिए जाने एवं सी०ए० सीट को इसमें अच्छी तरह से जे० हुक एवं एस० हुक से फिक्स नहीं किए जाने के कारण छत साधारण हवा भी नहीं झेल पाया। साथ ही शेड में लगाए गए दरवाजे एवं खिड़कियों के चौखट एवं पल्ले आकार एवं मोटाई में प्राक्कलन की विशिष्टियों के अनुरूप नहीं पाए गए। निरीक्षण प्रतिवेदन के साथ किसी प्रकार का साक्ष्य संलग्न नहीं किया गया है। संचालन पदाधिकारी द्वारा विभागीय कार्यवाही के जाँच प्रतिवेदन में इन दोनों आरोपों को प्रमाणित नहीं होने का मंतव्य दिया गया है। संचालन पदाधिकारी का मंतव्य है कि चक्रवाती हवा के कारण केवल इस प्रमण्डल में ही नहीं बल्कि अन्य प्रमण्डलों में भी काफी नुकसान हुआ था। ऐसी स्थिति में

सी0ए0सीट का आंशिक रूप से उड़ जाना स्वाभाविक तौर पर संभव है। इसके लिए किसी पदाधिकारी को दोषी करार देना उचित नहीं है। जीप शेड एवं चौकीदार शेड में खिड़की एवं दरवाजे में कराए गए कार्य के संबंध में संचालन पदाधिकारी का मतव्य है कि संवेदक द्वारा घटिया निर्माण के कारण विपत्र में इस कार्य को सम्मिलित नहीं किया गया और न ही इसका भुगतान किया गया। अतः यह आरोप भी आरोपित पदाधिकारी के विरुद्ध प्रमाणित नहीं होता है।

उपर्युक्त तथ्यों एवं उपलब्ध अभिलेखों की विवेचना से स्पष्ट होता है कि चौकीदार शेड एवं जीप शेड में कराया गया मरम्मत कार्य चक्रवाती हवा के कारण क्षतिग्रस्त हुआ था जिसे बाद में ठीक करवाया गया। श्री केसरी के द्वितीय कारण पृच्छा के उत्तर के साथ संलग्न फोटोग्राफ्स से इस बात की पुष्टि होती है।

अतः आरोप के इस अंश पर श्री केसरी का द्वितीय कारण पृच्छा का उत्तर स्वीकार योग्य है।

जीप शेड एवं चौकीदार शेड में कराए गए लकड़ी का कार्य यथा खिड़की एवं दरवाजे प्राक्कलन की विशिष्टियों के अनुरूप नहीं थी, इसकी पुष्टि श्री केसरी के द्वितीय कारण पृच्छा के प्रत्युत्तर एवं मुख्य अभियंता के प्रतिवेदन से होती है। श्री केसरी का यह कहना है कि संवेदक द्वारा कराए गए इस कार्य का भुगतान उनके द्वारा नहीं किया गया है, संलग्न साक्ष्यों के आधार पर प्रमाणित होता है। किन्तु प्राक्कलन की विशिष्टियों के अनुसार कार्य कराए जाने की जिम्मेवारी कनीय अभियंता एवं सहायक अभियंता की थी जिसे कराने में विफल रहे। इसलिए आरोप के दूसरे अंश के संबंध में श्री केसरी का द्वितीय कारण पृच्छा का उत्तर स्वीकार योग्य नहीं है एवं आरोप प्रमाणित है।

अतएव मामले की सम्यक समीक्षोपरांत उक्त प्रमाणित आरोप के लिए श्री केसरी के विरुद्ध निम्नदण्ड अधिरोपित करने का निर्णय सरकार के स्तर से लिया गया है :-

"निन्दन" वर्ष 2003-04

सरकार के उक्त निर्णय के आलोक में श्री राजेन्द्र प्रसाद केसरी, तत्कालीन सहायक अभियन्ता, उत्तर कोयल नहर प्रमंडल सं०-2, औरंगाबाद के विरुद्ध निम्न दण्ड अधिरोपित करते हुए संसूचित किया जाता है :-

"निन्दन" वर्ष 2003-04

बिहार-राज्यपाल के आदेश से,
राकेश मोहन,
सरकार के संयुक्त सचिव।

अधीक्षक, सचिवालय मुद्रणालय,

बिहार, पटना द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित।

बिहार गजट (असाधारण) 607-571+10-डी0टी0पी0।

Website: <http://egazette.bih.nic.in>